	2. अपने वाद्य के संपूर्ण अंग का विवरण	50	120
	प्रायोगिक		
	1. कंठ संगीत के पाठ्यक्रम के रागों में ही आलाप, तान, तोड़ा एवं झाला		
	2. गज वाद्य व बांसुरी, गायन पद्धति के अनुसार कोण, मिजराब से बजने वाले गत तोड़ा अंग से अभ्यास ।		
	योग	100	180

भारतीय संगीत - तबला, पखावज
विषय कोड [161]
कक्षा 12वीं

समय 3 घंटा

पूर्णांक -100

सैद्धांतिक -50

प्रायोगिक -50

ईकाई क्रमांक	**विषय समाग्री**	**अंक**	**आबंटितकालखण्ड**
	सैद्धांतिक	50	60
01	तबला की उत्पति एवं विकास	4	5
02	तबले का सचित्र वर्णन	4	3
03	अवनद्ध वाद्यों का इतिहास	5	4
04	**तबले के घराने एवं बाज** - दिल्ली, लखनऊ, बनारस, पंजाब,फर्रुखाबाद, अजराड़ा	4	5
05	**ताल सिद्धान्त** - काल,मार्ग, क्रिया, अंग, गुट, जाति, लय, गति, प्रस्तार ।	3	5
06	**ताल लिपि पद्धति** - पं. विष्णु नारायण भातखण्डे एवं पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर	3	5
07	वर्तमान परिप्रेक्षय में तबला	3	5
08	**ताल** - झपताल में मुखड़ा, पेशकर, कायदा, रेला, टुकड़ा, परन फरमाईशी, चक्करदार परमन	5	5
09	**पारिभाषिक शब्द** - टुकड़ा, कायदा, ताल, लय, लग्गी, गजरा, खाली, दायां, बांया, मात्रा, स्याही, चांटी, झपताल, चौताल, एकताल,धमार, त्रिताल, तिलवाड़ा ताल का ठेका दुगुन सहित ।	5	7
10	**तालों का तुलनात्मक अध्यनन** - 1. त्रिताल - तिलवाड़ा 2. झपताल - सूतताल 3. एकताल - चौताल विभिन्न मात्राओं की तिहाइयां - 4 मात्रा से 16 मात्रा तक	6	6

11	**जीवनी –** पं. अनोखेलाल, पं. किशनमहाराज, पं. सामता प्रसाद, पं, कुदऊंसिंह पखावजी ।	5	6
12	**तबले के मूल वर्ण –**	3	4
	योग **पूर्णांक**	**50**	**60**

	प्रायोगिक –		
	पाठ्यक्रम में निम्नलिखित तालों का समावेश किया गया है – दादरा, कहरवा, झपताल, एकताल, चौताल, आड़ा, चौताल, त्रिताल ।		**120**
1.	पाठ्यक्रम के सभी तालों को मध्यलय में बजाने का अभ्यास	5	
2.	पाठ्यक्रम के सभी तालों को ठाह एवं दुगुन के साथ हाथ से ताल लगाकर बोलने का अभ्यास	5	
3.	त्रिताल के अतिरिक्त किसी भी एक ताल को 10 मिनट तक स्वतंत्ररुप से टुकड़े, कायदें तिहाइंया, रेला, परन आदि नगमें के साथ बजाना	20	
4.	एकताल तथा झपताल के कायदे के 4-4 प्रकार सहित बजाने का अभ्यास	10	
5.	चौताल को दुगुन सहित बजाना	2	
6.	तबले में तिरकिट व धिरकिट बजाने का अभ्यास	2	
7.	सुगम संगीत के साथ संगत का अभ्यास	3	
8.	तबले पर बजती हुई ताल को पहचानना	3	
	योग	**50**	**120**